Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 12 | Dec 2023

हिन्दी साहित्य के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान

Umashankar Ray

M.A HINDI (UGC NET&JRF) Department of Hindi, Lalit Narayan Mithila University, Directorate of Distance Education, Darbhanga, Bihar

ABSTRACT

हिन्दी नवजागरण में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व, सृजन क्षमता, विद्वता, गहन शोधपरक मूल्यांकन, निरीक्षण व अटूट हिन्दी सेवा में परिलक्षित होता है। उन्होंने सरस्वती जैसी पत्रिका को हिन्दी की सशक्त पत्रिका के रूप में प्रतिस्थापित कर हिन्दी प्रदेश में एक नयी समाजिक चेतना का प्रसार किया है। इसके माध्यम से उन्होंने हिन्दी नावजागरण में वैचारिक क्रांति उत्पन्न की और नवजागरण से जुड़े लेखकों के प्रेरणास्त्रोत बने। महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के पहले लेखक थे, जिन्होंने केवल अपनी जातीय परंपरा का गहन अध्ययन हीं नही किया था, बल्कि उसे आलोचकीय दृष्टि से भी देखा था। उन्होंने अनेक विधाओं में रचना की। कविता, कहानी, आलोचना, पुस्तक समीक्षा, अनुवाद, जीवनी, आदि विधाओं के साथ उन्होंने अर्थशास्त्र, विज्ञान, इतिहास आदि अन्य अनुशासनों में न सिर्फ विपुल मात्रा में लिखा बल्कि अन्य लेखकों को भी इस दिशा में लेखन के लिए प्रेरित किया। द्विवेदी जी केवल कविता, कहानी, आलोचना आदि को हीं साहित्य मानने के विरूद्ध थे। वे अर्थशास्त्र, इतिहास, पुरातत्व, समाजशास्त्र आदि विषयों को भी साहित्य के हीं दायरे में रखते थे। वस्तुतः स्वाधीनता, स्वेदेशाी और स्वावलंबन को गति देने वाले ज्ञान–विज्ञान के तमाम अधारों को वे आंदोलित करना चाहते थे। इस कार्य के लिए उन्होंने सिर्फ उपदेश नहीं दिया बल्कि मनसा, वाचा, कर्मणा स्वंय लिखकर दिखाया।

KEYWORDS: नवजागरण, हस्तलिखित, स्वाध्याय, परिष्कृत, मानकीकरण, व्याकरणसम्मत, प्रेरणास्त्रोत, बहुमुखी, समीक्षात्मक, मेरूदण्ड, परिमार्जित आदि।

प्रस्तावना

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1864 ई0 में उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ था। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण स्कूली शिक्षा पूरी कर उन्होंने रेलवे में कर ली। बाद में उन्होंने उस नौकरी से इस्तीफा देकर सन् 1903 ई0 में प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका सरस्वती का संपादन शुरू किया और सन् 1920 ई0 तक उसके संपादन से जुड़े रहे। सरस्वती पत्रिका के सम्पादक के रूप में आचार्य द्विवेदी की साहित्य साधना अपनी बहुमुखी शक्ति के साथ प्रकाश में आती है। सरस्वती पत्रिका समान्य रचनाओं को प्रकाश में लाने वाली पत्रिका नहीं थी, वरन् भारतीयता, देशप्रेम एवं समाज–सुधार की भावना से ओत प्रोत कवियों एवं साहित्यकारों के लिए आदर्श शिक्षण संस्था का कार्य कर रही थी।

राष्ट्रीयता, देशप्रेम एवं समाज सुधार की भावना भारतेन्दु युग में ही अंकुरित हो चुकी थी परन्तु उसका पल्लवन एवं पूर्ण विकास हिन्दी साहित्य की विविध विधायों के माध्यम से द्विवेदी युग में हुआ। भारतेन्दु युग में गद्य शैली पर अधारित रचनाएँ तो टूटी–फूटी एवं अस्त–व्यस्त ब्रज–मिश्रित खड़ी बोली में होने लगी थी परन्तु काव्य रचना ब्रज भाषा में हीं चल रही थी। आचार्य द्विवेदी ने खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने तथा उसे परिष्कृत, सुसंस्कृत, व्याकरण ासम्मत एवं सशक्त रूप प्रदान करने का महान दायित्व अपने उपर लिया। प्रारम्भ में सरस्वती पत्रिका के लिए जो सामग्री उपलब्ध हो रही थी वह भाषा एवं व्याकरणगत त्रुटियों से परिपर्ण तथा वस्तुपक्ष की शिथिलता लिए होती थी। द्विवेदी जी एक ओर सरस्वती के लिए रात–दिन लिखते तथा दूसरी ओर कवियों एवं लेखकों की रचनाओं का वस्तुगत एवं भाषागत संशोधन करते थे। आचार्य द्विवेदी जैसे कर्मनिष्ठ साहित्य–सेवी को पाकर हिन्दी अपने भाव सौन्दर्य तथा भाषा–वैभव में धन्य हो उठी।

हिन्दी साहित्य एवं भाषा के कायाकल्प हेतु द्विवेदी जी का प्रथम संकल्प था ब्रज भाषा के स्थान पर शुद्ध, परिनिष्ठित, प्रांजल एवं सुसंस्कृत खड़ी बोली की प्रतिष्ठा। खड़ी बोली को ब्रजभाषा के दलदल से निकालकर प्रौढ़ता एवं सुनिश्चितता प्रदान करते हुए राष्ट्रभाषा के पद पर अलंकृत होने योग्य बनाने का प्रथम श्रेय आचार्य द्विवेदी को हीं है।

आचार्य द्विवेदी ने तत्कालिन प्रचलित खड़ी बोली हिन्दी भाषा के स्वरूप को संकलित एवं व्यवस्थित करने का कार्य किया, क्योंकि उस समय भाषा व्यवहार में वैविध्य अधिक था, मानकीकरण या एकरूपता कम। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पत्रिका सरस्वती के माध्यम से भाषा को एक व्यवस्था एवं एकरूपता देने का महत्वपूर्ण कार्य किया। वे संपादक के अतिरिक्त रचनाकार, वैयाकरण, अनुवादक एवं अर्थशास्त्री थे। उन्होंने यह सब अपने स्वाध्याय के बल पर अर्जित किया था। उन्होंने भाषा की अस्मिता और व्याकरणगत त्रुटियों को दूर करने का निरंतर अथक प्रयास किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भाषागत अराजकता में व्यवस्था लाने का सर्वाधिक श्रेय इन्ही को है।

Copyright© 2023, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

यही नहीं अपने युगीन एवं परवर्ती लेखकों यथा–मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द्र, निराला आदि को भाषिक दृष्टि एवं अनुशासन देने का महती काम महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हीं किया है। अचार्य रामचन्द्र शुक्ल महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि ''गद्य की भाषा पर द्विवेदी जी के शुभ प्रभाव का स्मरण जब तक भाषा के शुद्धता आवश्यक समझी जाएगी तब तक बना रहेगा। हिन्दी साहित्य के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान को निम्न शीषर्को के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता हैः

साहित्य सुधारक के भूमिका मेंः

हिन्दी साहित्य की भाव सम्पदा को आदर्श, गम्भीर एवं गरिमामय स्वरूप प्रदान करने के निमित्त उन्होंने साहित्य में श्रृंगारिकता के पूर्ण बहिष्कार का संकल्प लिया। रीतिकल से चली आ रही श्रृंगारिक अश्लीलता को समाप्त करने के प्रयास में द्विवेदी जी इतने सतर्क हो गए कि उन्होंने प्रेम और सौंदर्य को भी हिन्दी साहित्य से निष्कासित कर दिया, जिसके आवरण में श्रृंगारिकता के छिपे होने की संभावना थी। मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' की पाण्डुलिपियों में संशोधन, निराला की 'जूही की कली' कविता को उपेक्षापूर्वक सरस्वती में छापने से इंकार कर देना तथा 'कालिदास की निरंकुशता' शीर्षक अपने लेख में संस्कृत के कवि कालिदास के अमर्यादित तथा अविवेकपूर्ण श्रृंगार–वर्णन पर कठोर प्रहार करना उनके श्रृंगार–विरोधी संकल्प का सशक्त प्रमाण है।

साहित्य रचना हेतु, आदर्श, मंगलमयी, भाव एवं ज्ञान सम्पदा की प्राप्ति के लिए आचार्य द्विवेदी ने कवियों एवं लेखकों को 'अतीत की ओर अर्थात संस्कृत साहित्य की ओर चलने की प्रेरणा दी जहाँ ज्ञान, भक्ति, अध्यात्म, संस्कृति, आर्दश चरित्र एवं सच्चे निष्कपट प्रेम का राज्य है।

भाषा–शैली का व्यापक दृष्टीकोणः

द्विवेदी जी की साहित्य–साधना के विविध रूपों में उनको सर्वाधिक महत्व प्रदान करता हैः उनका भाषा संशोधक रूप, जो वस्तुतः युग प्रवर्तक के रूप में उन्हें अमरत्व प्रदान करता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भाषा संबंधी सावधानी का प्रतिपादन करते हुए विद्वान विचारक डॉ कैलाशचन्द्र भाटिया कहते हैं– ''भाषा संशोधन के संबंध में आचार्य द्विवेदी की सरस्वती के लिए तैयार की गई पांडुलिपियाँ महत्वपूर्ण हैं जिनकी ओर स्वंय आचार्य द्विवेदी ने श्याम सुंदर दास जी को एक पत्र में संकत किया था ''मेरे समय की सरस्वती की 17 वर्ष की हस्तलिखित कॉपियों मेरे पास है। किसी समय भविष्य में वे शायद मूल्यवान समझी जाएँ। उनको देखने से पता लगेगा की आज–कल के हिन्दी के अनेक धुरंधर लेखक किस तरह राह पर लाए गए थे, वे भी उपलब्ध हैं। सभा चाहे तो जिल्द बाँध कर रख छोड़े। भाषा में वर्तनी संबंधी संशोधनों पर विचार प्रकट करते हुए श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी जी ने कहा है कि ''पत्रकार को रचना भी करनी पड़ती है और कभी–कभी पूर्नरचना के लिए विध्वंस भी। श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी भाषा की वर्तनी और व्यवहार में एकरूपता चाहते थे और उन्होने एक लेख लिखा 'भाषा और व्याकरण' इस लेख से हिन्दी जगत में खलबली मच गई। लेख लिखा गया था प्रयाग में लेकिन उसका उत्तर दिया भारतमित्र के संपादक और प्रवाहमान शैली के समर्थ लेखक श्री बालमुकुन्द गुप्त ने। उन्होंने एक लेखमाला हीं लिख डाली, जिसे उन्होंने आत्माराम के नाम से लिखा। इसके उत्तर में कलकत्ता के हीं आचार्य गोबिन्द नारायण मिश्र ने हिन्दी बंगवासी' में 'आत्माराम की टेटे' नाम से एक दूसरी लेखमाला लिखी और यह विवाद यहाँ प्रसिद्ध हो गया।

यह विवाद इसलिए बढ़ गया कि द्विवेदी जी भाषा की अशुद्धियों पर ध्यान देने की बातें करते थे। परन्तु अन्य संपादक के पत्रों में व्याकारण संबंधी अशुद्धियों की भरमार रहती थी। द्विवेदी जी के परामर्श से उन्हें अपनी प्रतिष्ठा पर आधात सा लगता था।

निबन्ध लेखन में नवीनताः

द्विवेदी जी ने जिज्ञासु लेखकों को पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित किया। देश–विदेश के साहित्य एवं ज्ञान–विज्ञान से प्राप्त सामग्री के आधार पर उन्होंने समीक्षात्मक लेख लिखे तथा समाज में व्याप्त परम्परागत भ्रान्तियों, रूढ़ियों एवं अज्ञानजन्य ग्रन्थियों को सुलझाने का प्रयास किया। ''हंस का नीर–क्षीर–विवके'' उनका एक निबंध है जिसमें अमेरिका में किए गए प्रयोगों का उल्लेख करते हुए द्विवेदी जी ने भारतीयों की अन्धप्रवृति की आलोचना की है जो बिना परीक्षण के परम्परा से चली आ रही निराधार बातों को सत्य मान लेते हैं। वस्तुतः हंस पक्षी सरोवरों में पाए जाने वाले मृणालदण्ड को जल से निकालकर उसकी ग्रंन्थियों से निकलनेवाले दूध जैसे तरल पदार्थ का पान करता है न कि जलमिश्रित दूध को अलग करके पिता है। इस वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक निबंध द्वारा द्विवेदी जी ने इस भ्रांति को निमूल सिद्ध किया।

द्विवेदी जी सच्चे अर्थों मे आचार्य थे। उनका व्यक्तित्व महान था, जो उनके निबंधो में झलकता है। मात्र 'सरस्वती' पत्रिका के लिए हीं नहीं, बल्कि अन्य पत्र–पत्रिकाओं के लिए भी वे संशोधक एवं लेखकों के प्रेरक रूप में प्रतितिष्ठ थे। उनका आचार्यत्व जहाँ एक ओर सम्पूर्ण हिन्दी जगत पर छाया हुआ था, उनका साहित्यकार रूप भी कुछ कम नहीं था। उन्होंने कविता, निबन्ध, समालोचना, भाषा, व्याकरण, इतिहास, अर्थशास्त्र, प्राचीन साहित्य तथा संस्कृति, वैज्ञानिक अविष्कार, अनुवाद आदि विभिन्न पक्षों पर अपनी सशक्त लेखनी चलाई तथा सफलता प्राप्त की। उन्होंने लगभग 80 ग्रंथों का प्रणयन किया तथा भाषा और व्याकरण से संबंधित अनेक लेख लिखकर कवियों तथा लेखकों का मार्गदर्शन किया। उनकी उल्लेखनीय गध–रचनाओं में ''नैषधचरित चर्चा'', ''हिन्दी भाषा की उत्पत्ति'', ''कालिदास की निरंकुशता'', ''साहित्य संदर्भ'', ''रसग रंजन'', ''सम्पत्ति शास्त्र'', ''साहित्य सीकर'', ''विचार विमर्श'' आदि का विशिष्ट स्थान है।

खड़ी बोली के प्रवर्तक कविः

द्विवेदी जी को पाकर खड़ी बोली अपने शुद्ध, सजीव तथा सशक्त रूप में मुखरित हो उठी। उन्होंने हिन्दी के शब्द भंडार में पर्याप्त अभिवृद्धि की है। आवश्यकतानुसार एक ओर तो सरल, तत्तसम संस्कृत शब्दों का प्रयोग प्रचलित किया, दूसरी ओर बंगला, मराठी, उर्दू और अंग्रेजी के सरल शब्दों को स्थान दिया। उन्होंने अपनी कर्मठता, विद्वता से खड़ीबोली हिन्दी की सामर्थ्य और साहित्यिक समृद्धि को प्रगति पथ पर अग्रसारित किया। सरस्वती पत्रिका में उन्होंने अपनी कविता 'हे कविते' में खड़ी बोली का तत्तसम शब्द रूप पाठकों के समक्ष

रखा–''सुरम्य रूप! रस राशि रंजिते विचित्र वर्णाभरणे। कहाँ गई? अलौकिकानंद विधायिनी महा कवीन्द्र कांतें! कविते! अहो कहाँ?''

द्विवेदी जी ने अपने लेख 'कवि कर्तव्य' में लिखा हैः ''गद्य–पद्य की भाषा पृथक–पृथक नहीं होनी चाहिए। सभ्य समाज की भाषा हो, उसी भाषा में गद्य पद्ययात्मक साहित्य चाहिए। बोलना एक भाषा में और कविता में प्रयोग करना दूसरी भाषा प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है। जो लोग हिन्दी बोलते हैं और हिन्दी हीं के गद्य साहित्य की सुश्रुषा करते हैं उसके पद्य में ब्रजभाषा का आधिपत्य बहुत दिन नही रह सकता है।'' द्विवेदी जी ने भाषा व्याकरण की त्रुटियों की ओर हिन्दी लेखकों और पाठकों का ध्यान आकर्षित करने हेतु सरस्वती में भाषा और व्याकरण नामक स्वलिखित लेख प्रकाशित किया और उसमें लिखा हैं कि 'जिस भाषा में बड़े–बड़े इतिहास, काव्य, नाटक, दर्शन विज्ञान और कला–कौशल से संबंध रखनेवाले महत्वपूर्ण ग्रथ लिखें जाते हैं उसका श्रृखलाबद्ध होना बहुत जरूरी है। उसका व्याकरण बनाना चाहिए। लिखित भाषा में हीं ग्रंथकार अपने कीर्तिकलाप को रखकर अपना नश्वर शरीर छोड़ जाते हैं। व्याकरण हीं उस कृति का प्रधान रक्षक है।'

निष्कर्ष

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी साहित्य में विशेष महत्व है इसी कारण उनके समय के नाम पर द्विवेदी युग नामकरण किया गया है। भाषा तथा व्याकरण के नियमों तथा विराम चिन्हों आदि का ऐसा प्रयोंग किया जैसा कि पूर्ववर्ती लेखकों में अभाव था। उन्होंने भाषा को परिष्कृत करने की इच्छा और संकल्प लिए, और इस संकल्प को पुरा करके हीं विश्राम किया। इसके परिणाम स्वरूप इस युग के अनेक कवियों, लेखकों ने खड़ी बोली के विकास में परिमार्जित भाषा का प्रयोग कर खड़ी बोली को सर्वोच्च स्थान प्राप्त करवाया। मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय इसी काल के श्रेष्ठ कवियों में से हैं। इसी काल में 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादन से भी खड़ी बोली लोगों को प्रोत्साहित करने लगी और प्रचुर मात्रा में खड़ी बोली के साहित्य का सृजन कार्य होने लगा और सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ इसमें प्रकाशित होने लगी।

युगीन काव्यधारा के इस सशक्त स्वरूप में युग–निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की देशभक्ति राष्ट्रीयता एवं समाजिक एकता की विराट परिकल्पना हीं कार्य कर रही है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के मेरूदण्ड स्वरूप है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की कृति हिन्दी साहित्य में सदा अमर रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, ''हिन्दी गध साहित्य'' पृष्ठ–494
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' नागरी प्रचारिणी सभा काशी।
3. सुशील त्रिवेदी, ''पत्रकारिता के युग निर्माता महावीर प्रसाद द्वि वेदी'' पृष्ठ–23
4. विनोद तिवारी, ''आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के श्रेष्ठ निबन्ध'' लोकभारती प्रकाशन
5. रामविलास शर्मा, ''महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पृष्ठ–291,301 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ''विचारकोश'' पृष्ठ–137
7. इन्दसेन सिंह, ''आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता'' पृष्ठ–88
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी, ''ययावर, भारत'' साहित्य अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली